फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 109 जुलाई 1997

अपने बारे में, इस अखबार के बारे में बात करने आप किसी भी दिन मजदूर लाइब्रेरी आ सकते / सकती हैं।

क्यों जानें ? क्या-क्या जानें ? कैसे जानें ? क्या-क्या कर सकते हैं ? (6)

टोलियाँ टोलियाँ टोलियाँ टोलियाँ

सामान्य तौर पर मैनेजमेन्टें और सरकारें चाहती हैं कि मजदूर एक-दूसरे से अलग रहें। अकेले-अकेले का शोषण और दमन आसान है। परन्तु फैक्ट्री हो चाहे मोहल्ला, प्रत्येक वरकर अपनी उठ-बैठ का एक छोटा-सा दायरा, एक टोली बना ही लेती/लेता है। कार्यस्थल पर व बस्ती में हमारी यह छोटी-छोटी टोलियाँ हमारी ढाल होने के साथ-साथ कुछ-न-कुछ हासिल करने के जरिये भी हैं।

विशेष तौर पर मैनेजमेन्टें और सरकारें चाहती हैं कि जब मजदूरों का असन्तोष व गुस्सा बढ जाते हैं तब अनगिनत स्थानों पर हर पल मजदूरों से टकराते रहने की बजाय एक जगह व एक समय मजदूरों से निपटें। एकत्र व एकजुट मजदूरों से निपटना दिक्कतें लिये है पर साहब लोग इसे अनिवार्य और "आवश्यक बुराई" मान कर चलते हैं। इसलिये पुलिस और फौज तो एक स्थान पर एकत्र मजदूरों की भीड़ को कुचलने के लिये हैं ही, दीर्घकालीन एग्रीमेन्टों का जाल भी इस सिलसिले का हिस्सा है। इसीलिये हमारी पीढी के ही नहीं बल्कि पिछली पीढियों के अनुभवों को भी देखते हैं तब **हमें "महान पराजयों" का एक अटूट सिलसिला मिलता है। बेइमान लीडर हमें बेच खाते हैं तो ईमानदार नेता हमें मरवा देते हैं।**

सामान्य और विशेष का फर्क साहबों के लिये बहुत महत्वपूर्ण है पर मजदूरों के लिये इनमें रत्ती-भर फर्क नहीं है।

ऐसे में पिछले अंक में **"मजदूर अपने हित में कदम कैसे उठायें?"** के प्रश्न पर चर्चा में टोलियों का जो जिक्र आया था उस पर अधिक विचार-विमर्श की जरूरत उभरी है।

एक साथ उठ-बैठ वालों को ही टोली कहा जा रहा है। प्रत्येक मजदूर चार-पाँच की टोली बनाने में आसानी से साझेदार बन सकती/सकता है —यह हक़ीकत का दूसरे शब्दों में बयान मात्र है। पाँच-सात लोगों के साथ घुलना-मिलना, उनके बीच खुल कर अपनी बात कहना, वहाँ राजी होने पर ही हाँ कहना और मन बन जाये तभी कदम उठाना हर वरकर के बस का है। **टोली हर मजदूर के मन के माफिक है।**

डिपार्टमेन्ट-सैक्शन-मोहल्ले के स्तर पर टोलियाँ रोज आजमाई जाती हैं और हम इन्हें अपने लिये बेहद उपयोगी पाते हैं। हारी-बीमारी हो चाहे किसी साहब से खट-पट, अपने साथ उठ-बैठ वालों का सहयोग कितना महत्वपूर्ण है यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है।

टोलियों के तरीके को फैक्ट्री स्तर पर आजमाने में :

✔ तैयारी में समय नहीं लगेगा। साथ-साथ उठ-बैठ वालों के समूह, यानि टोलियाँ बनी-बनाई हैं। हमें टोलियों में थोड़ा-बहुत फेर-बदल कर मोटा-मोटी तालमेल करने की जरूरत मात्र है।

✔ जिस फैक्ट्री में 100 मजदूर हैं वहाँ पाँच-पाँच की 20 टोलियाँ बनेंगी। एक साथ 100 द्वारा कदम उठाने पर हम मैनेजमेन्ट की तालाबन्दी और पुलिस की लाठीचार्ज के लिये निशाना बनते हैं परन्तु पाँच-पाँच के ग्रुप में कदम उठायेंगे तो साहब लोगों को बड़ा हमला करने का निशाना नहीं देंगे। चींटी को मारने में हाथी लगाना बहुत मँहगा तो है ही, हास्यास्पद भी है।

✔ आपस में तालमेल कर 20 टोलियाँ बारी-बारी से किसी साहब को अपनी बात ही कहने जायेंगी तो भी ग्यारहवीं-बारहवीं टोली के पहुँचने तक साहब का सिर चकराने लगेगा।

✔ टोलियों का तालमेल हमारी साँझी शक्ति को, हमारे सामुहिक बल को वह रूप दे देता है कि साहबों को न तो धमकाने को और न ही खरीदने को लीडर नाम के व्यक्ति उपलब्ध होंगे। सौ का बीस टोलियों में बँटे होना तथा टोलियों का आपस में तालमेल नुमाइन्दों के लिये कोई जगह नहीं छोड़ता। बिना लीडरों के साहब! उनके हाव-भाव की कल्पना कीजिये।

इधर एक बड़ी फैक्ट्री के मजदूरों ने

कई लीडरों को आजमा कर

तीन झन्डे बदल कर

चौदह महीनों के अपने बकाया वेतन के लिये टोलियों के रूप में कदम उठाने का सिलसिला शुरू किया है। आठ-आठ, दस-दस के ग्रुप में यह मजदूर डी. सी. और डी. एल. सी. के पास जा रहे हैं। दस दिन में इन मजदूरों की चौदह-पन्द्रह टोलियों के पहुँचने पर ही डी. सी. और डी. एल. सी. हरकत में आ गये हैं। दो हजार मजदूरों की 200 से ऊपर टोलियों के पहुँचने पर ?..... खतरे को भाँप कर उस फैक्ट्री की मैनेजमेन्ट और वहाँ लीडरों के सब गिरोह एकजुट हो कर हाथ-पैर मारने लगे हैं।

साहबों की नाक में दम करने के अतिरिक्त अन्य मजदूरों से अपनी बात कहने के लिये भी टोलियों के रूप में कदम उठाने के बारे में एक मजदूर ने काफी सोचा है। बात शुरू करने में दिक्कतों को देखते हुये उन्होंने गत्तों पर लिखने का जिक्र किया। रोज सुबह की शिफ्ट में आठ-आठ, दस-दस मजदूरों की दस-बारह टोलियाँ सड़कों पर। गत्तों को अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के सामने रखने पर होती चर्चा से फरीदाबाद-भर के मजदूरों में बात फैल जायेगी। अत्यधिक परेशान मजदूरों से बात-चीत करने के कारण अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर दस-बीस मिनट लेट ड्युटी पर पहुँचेंगे तो...... (जारी)

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

साहबों की गम्भीर क्रूरता को टँगड़ी मारती मजदूरों की मस्ती पृथ्वी पर आशा की किरणें हैं। साथी मजदूरो, अपनी किरणों से इस अखबार को भी रौशन करो। सूरज ने अपनी रौशनी के लिये हम से आज तक पैसे नहीं माँगे। हम उम्मीद करते हैं कि आप भी अपने मस्ती-भरे किस्सों के हम से पैसे नहीं माँगेंगे। आप फ्री दीजिये और अखबार भी फ्री लीजिये।

शिफ्ट ड्युटी

डेन्टिस्ट डॉ. दीपक दवे से जब मैं दाँतों की नियमित जाँच करवाने के लिये गया तो मेरी जीभ देख कर पूछने लगे, "क्या आप शिफ्ट ड्युटी करते हैं ?" मैंने कहा, "हाँ, फस्ट और सैकेन्ड शिफ्ट है। हर सप्ताह बदलती रहती है।" इस पर वे बोले कि ध्यान रखना कॉनस्टिपेशन (कब्ज) है। और ठीक होने के लिये बी-कम्पलैक्स विटामिन की कैपसूल लिख दी।

17.6.97

— नवीन छत्रोला, बड़ौदा

गवर्नमेन्ट प्रेस

प्रधानमंत्री को भेजे पत्र की एक प्रति फरीदाबाद स्थित गवर्नमेन्ट प्रेस के एक वरकर ने हमें भेजी है। पत्र में प्रबन्धक द्वारा मजदूरों के बीच जाति के आधार पर भेदभाव और दुर्व्यवहार करने की बातें हैं।

खानक की खानों से

तीन जून को तोशाम के निकट खानक की खानों के पत्थर फोड़ मजदूरों को ईट का जवाब पत्थर से देते देखा गया। वर्दीधारी संगठित गुन्डों पर बेचारे निहत्थे मजदूरों को जवाबी कार्रवाई करते हुये पत्थर चार्ज करने पर मजबूर होना पड़ा।

बुरी तरह मार खाये व खार खाये व्यवस्था के संचालकों ने मजदूरों को आतंकित करने हेतु खानक गाँव के निकटवर्ती पहाड़ी क्षेत्र को पुलिस छावनी बना दिया है। उपायुक्त और उपमण्डल अधिकारी थाने में बैठ कर ज्यान बचाते पाये गये।

पूँजीवादी अखबार दैनिक ट्रिब्यून व दैनिक जागरण 4.6.97 के बाद निरन्तर मुखपृष्ठ पर समाचार दे रहे हैं।

लगभग दस हजार परिवारों के 25 हजार भूमिहीन कमेरे पिछले 30-40 वर्ष से पत्थर फोड़ कर अपना तथा अपने परिवार का पेट पाल रहे हैं। वे लगभग 150 स्टोन क्रेशरों को रोड़ी हेतु पत्थर प्रदान करते हैं।

सरकार की नई नीति के तहत पहाड़ों को कुछ निजी कम्पनियों ने पट्टे पर लिया। मुनाफाखोरी के लिये पुराने मजदूरों को सस्ती मजदूरी करने पर मजबूर करने में फेल होने पर उन्होंने अपनी मर्जी के मजदूर भर्ती करना चाहा पर पुराने मजदूर हटे नहीं।

उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) आर.बी. लांग्यान तथा उपायुक्त भिवानी श्री आर.डी. श्योकन्द भी सभी प्रयत्नों के बावजूद पुराने मजदूरों से उनका कब्जा नहीं हटा सके।

दूसरी तरफ ठेकेदारों के नेता जोगेन्द्र व देवेन्द्र तथा मजदूर नेता सतबीर और प्रभात भी मजदूरों के तेज तेवर देख कर बिचौलियों की भूमिका को नहीं निभा सके।

चूँकि अधिकतर मजदूर उच्च कमान के चुनाव हल्के के भूमिहीन हरिजन हैं अतः वे भी धर्मसंकट में फँस गये हैं। पहले से ही मरणासन्न पत्थर फोड़ मजदूर अपनी लगी लगाई मजदूरी को कायम रखने के लिये जिन्दा जी वहाँ से हटने को तैयार नहीं। उनका कहना है, "मरता क्या नहीं करता।"

9.6.97 — **एक अध्यापक**

अपनी बातें कहें

अखबार का जून अंक लेते समय **ड्युरेबल** फैक्ट्री के एक मजदूर ने मैनेजमेन्ट द्वारा वरकरों को जबरन हिसाब देने का जिक्र किया। एक **अप्रेन्टिस वरकर** ने आक्रोश-भरे शब्दों में **एस्कोर्ट्स** के प्लान्टों में अप्रेन्टिसों के साथ मैनेजमेन्ट के दुर्व्यवहार के बारे में बताया।

हर बार की तरह कई मजदूरों ने अपनी-अपनी फैक्ट्री के बारे में लिखने को कहा.....

हर मजदूर बेझिझक अपनी बातें इस अखबार में छपवा सकता/सकती है।

वरकर का नाम नहीं छापेंगे और नाम हम किसी को बताते भी नहीं।

अपना खत स्वयं आ कर मजदूर लाइब्रेरी में दे जायेंगे तो अच्छा रहेगा, कुछ गप-शप भी हो जायेगी। डाक से भेजने के लिये पता है —

मजदूर लाईब्रेरी
आटोपिन झुग्गी
एन.आई.टी.
फरीदाबाद—121001

सामुहिक कार्रवाई

जब प्रधानाचार्य ने अपने कार्यालय में सोफे डलवाये, कार्पेट बिछवाया और बेंत की दस-बारह कुर्सियाँ भी तब शिक्षक ऐसी बैंचों पर बैठते थे जिनकी उघड़ी कीलें कपड़े फाड़ती थीं। कई दिनों आपसी चर्चायें-टिप्पणियाँ चलती रहीं। एक दिन प्रार्थना-स्थल से लौट कर सब बैठ गये। इकाई मंत्री को इतना काम दिया कि प्रधानाचार्य से कहें कि कोई पहले कालांश में पढाने नहीं जा रहा है। आओ, बातें सुनो।

सभी ने टुकड़ों में बात रखी। एक वाक्य कोई कहता और दूसरा अन्य। एक के साँस लेने के लिये चुप होते ही दूसरा साथी बोलता। प्रधानाचार्य ने प्रबन्धक पर बात टाली। तुरन्त उनको ले आने का क्रम शुरू हुआ। उन्होंने सब सुनकर प्रधानाचार्य को आदेश दिया। पन्द्रह दिनों में बैंत की कुर्सियाँ अध्यापक कक्ष में आ गई। ....

18.5.97 — **राजबल,** मुरादाबाद

सुपर स्विच

अखबार के जून अंक के वितरण के समय 6 सैक्टर में प्लॉट नं. 5 के गेट पर बैठे मजदूरों से बात की तो उन्होंने एक प्रेस विज्ञप्ति हमें दी।

सुपर स्विच और एलमेक पेन्ट्स एन्ड प्रिन्ट, दोनों फैक्ट्रियाँ प्लॉट नं. 5 में स्थित हैं और दोनों की एक ही मैनेजमेन्ट है। इन फैक्ट्रियों में 83 परमानेन्ट, 35 कैजुअल और 35-40 ठेकेदारों के वरकर हैं। पुरानी एग्रीमेन्ट की समाप्ति का समय आने पर 15 मई को यूनियन ने नया सामुहिक माँग-पत्र दिया। सुपर स्विच और एलमेक मैनेजमेन्ट ने 15-20 काले वर्दीधारी और 10 सादे लिबास वाले भर्ती करके कार्यरत मजदूरों को डराना-धमकाना शुरू कर दिया। रात को वरकरों के घरों पर जा कर भी धमकाने लगे। 8 मजदूरों ने परेशान हो कर हिसाब ले लिया। बाकी मजदूरों को निकालने के लिये मैनेजमेन्ट ने 3 जून से फैक्ट्री में लॉक आउट कर दिया है। सुपर स्विच मैनेजमेन्ट ने श्रम अधिकारी के सुझावों को मानने से इनकार कर दिया है और मजदूरों का मई का वेतन भी नहीं दिया है। अदालत से मैनेजमेन्ट 50 गज वाला स्टे भी ले आई है।

मैनेजमेन्टों के शिकंजे

मैनेजमेन्टों के लक्ष्य

✂ काम की रफ्तार बढाना ✂ कम मजदूरों से ज्यादा काम करवाना ✂ कम से कम वेतन देना ✂ मजदूरों की मेल-जोल, पहलकदमियों को बिखेरना ✂ नीरस को रंगीन दिखाना ✂ एकताओं की रचना द्वारा मजदूरों में सिरफुटौव्वल करवाना ✂ दहशत का माहौल बनाना ✂ डिसिप्लिन, यानि, मजदूरों पर जकड़ को मजबूत करना ✂ बिना नागा, हर पल काम करवाना, और बेशक अपना–अपना कट-कमीशन सुनिश्चित करना

काम करो काम

एक लाख का प्रोडक्शन करने पर एक-डेढ हजार मजदूर को मिलते हैं। विभिन्न टैक्सों, ब्याज, कट-कमीशन और मुनाफे के रूप में मजदूरों के उत्पादन के 99 प्रतिशत को हड़प लिया जाता है। हड़पने वालों के लिये यह सर्वोपरि महत्व का है कि मजदूर लगातार काम करें। प्रोडक्शन के लिये मैनेजमेन्टों का मजदूरों से सीधा वास्ता पड़ता है। और, काम से थके व ऊबे मजदूर हर वक्त आराम के लिये लालायित रहते हैं।

छुट्टी मत लो !

➔ कई छोटी फैक्ट्रियों और वर्कशॉपों में छुट्टी माँगने पर मजदूरों का जबरन हिसाब कर दिया जाता है।

➔ कई जगह साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं करने की शर्त पर ही भर्ती की जाती है।

➔ सरकारी न्यूनतम वेतन भी नहीं देना जितना व्यापक है उतना ही व्यापक है "ओवर टाइम" के नाम पर हर रोज 12 घन्टे ड्युटी करवाना।

➔ यह सीधे-सपाट तरीके छुट्टियों के खिलाफ अभियान चला रहे स्वामी अग्निवेश के मन के माफिक हैं। परन्तु पुरातन में आधुनिक का मेल शिष्यों को गुरुओं के कान काटने वाले बनाता है।

दो पैसे एक्स्ट्रा लो !

काम के जहर पर चीनी की परत चढाने के लिये मैनेजमेन्टें अटेन्डैन्स अलाउन्स देती हैं। महीने में एक भी छुट्टी नहीं करने पर कुछ पैसे लो। घन्टे की दर से भुगतान वाले मजदूरों को साप्ताहिक अवकाश का वेतन नहीं दिया जाता पर कई मैनेजमेन्टें हफ्ते में कोई छुट्टी नहीं करने पर साप्ताहिक अवकाश के लिये अलाउन्स देती हैं।

सवेतन छुट्टियाँ भी मत लो। इनके बदले में पैसे लो। साल-भर कोई छुट्टी नहीं लेने पर स्पेशल गिफ्ट !

चार पैसों का नुकसान

सवेतन छुट्टी लेने पर बेसिक व डी ए ही मिलेंगे, इनसैन्टिव तथा कई अलाउन्स के पैसे मारे जायेंगे। गैरहाजरी पर तो बेसिक व डी ए भी नहीं मिलेंगे। छुट्टियों का असर बोनस पर पड़ेगा। एल टी ए तभी मिलेगा जब निर्धारित हाजरियाँ पूरी हों।

दो कदम और आगे

वार्षिक मेन्टेनैन्स शट डाउन, सीजनल मंदी के समय कुछ मैनेजमेन्टें जबरन छुट्टी देती हैं तो कुछ मैनेजमेन्टें उस समय टूर का कार्यक्रम बना देती हैं। दोनों ही मामलों में मजदूरों को अपनी इच्छा से अपनी सवेतन छुट्टियाँ लेने से वंचित कर दिया जाता है। इस प्रकार एक तो मैनेजमेन्टें अपनी जरूरत पूरी करने के लिये छुट्टी करती हैं और साथ ही यह भी सुनिश्चित करती हैं कि वर्ष में बाकी समय मजदूर छुट्टी नहीं कर सकें।

कर्ज का फन्दा

घुटी हुई मैनेजमेन्टें मोटर साइकिल, रंगीन टी वी, फ्रिज, मकान, शादी के लिये मजदूरों को लोन देती हैं। कई बार वेतन में से कर्ज की किस्त कटने के बाद सौ-दो सौ रुपये ही बचते हैं। इनसैन्टिव के पैसे नहीं हों तो एस्कोर्ट्स के कई मजदूर दाल-रोटी तक नहीं खा सकें। ऐसे में छुट्टी करना ....

मैनेजमेन्टों का एक सूत्र यह भी है : " वेतन इतना कम रखो कि छुट्टी की सोचने पर मजदूर को पसीना आये।"

और आँखें दिखाना

अपनी छुट्टियाँ बाकी हैं तब भी मंजूर करवाने के बाद ही छुट्टी लो वरना सस्पैन्ड। "ज्यादा" छुट्टियाँ करने पर चार्जशीट। नौकरी से छुट्टी.....

फिर भी

आराम। मनोरंजन। स्वास्थ्य। मिलने-जुलने। सैर-सपाटे। ऊब से छुटकारे। मैनेजमेन्ट का विरोध करने। .... मजदूर छुट्टी करते ही रहते हैं।

चेन सिस्टम कार्य में थोड़े से मजदूरों द्वारा छुट्टी करने पर भी मैनेजमेन्टों का ताम-झाम लड़खड़ा जाता है।

जस्ट इन टाइम पद्धति ने समय पर पुर्जे पहुँचने को अत्यन्त महत्वपूर्ण बना कर वर्कशॉपों-एनसिलरियों-छोटी फैक्ट्रियों के मजदूरों के हाथों में बड़े पैमाने पर अफरा-तफरी पैदा करने की क्षमता दे दी है।

ऐसे में लालच और दण्ड के ताने-बाने को बड़े पैमाने पर काट कर मजदूरों द्वारा छुट्टी करना मैनेजमेन्टों को इहलोक से देवलोक दौड़ाता है।

शीश नवाते हुये

अवतारों-मसीहाओं-सन्तों-महात्माओं-महापुरुषों के काम का महिमागान करते पवित्र प्रवचनों के प्रचार-प्रसार पर मैनेजमेन्टें काफी खर्च-वर्च करती हैं। भगवान कृष्ण, प्रभु ईसा, हजरत मोहम्मद, गुरू नानक, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, चेयरमैन माओ, फील्ड मार्शल स्टालिन, महान चर्चिल, ग्रेट हिटलर के शब्दों,"कर्म ही पूजा है" के जाप करती मैनेजमेन्टें इन महान आत्माओं में मजदूरों की आस्था देख कर आशावान होने की कोशिश करती हैं और मजदूर हैं कि महान हस्तियों के जन्म व मृत्यु दिवसों की छुट्टियाँ माँगते हैं .....

प्रकाशित

a ballad against Work

Write to us if you want to read this book.

The book is free.

विरोध और बदलाव के ठुमके

☺ सरल कदम जो सब मजदूर हर रोज उठा सकते हैं ☺

अनेक बिन्दुओं पर
भिन्न -भिन्न क्षणों में
पाँच-पाँच दस-दस
मजदूरों की टोलियों द्वारा
विभिन्न मुद्दों पर
भिन्न - भिन्न रूपों में
उठाये जाते कदम
अनुशासन - नियन्त्रण -शोषण की
चौखटों को
दीमक की तरह चाट जाते हैं।
इसलिये
मजदूरों के लिये यह
सर्वोपरि महत्व के हैं
और इसीलिये
मजदूरों द्वारा खुद उठाये जाते
छोटे-छोटे कदमों को
शिक्षा, दीक्षा और संस्कार
महत्वहीन पेश करते हैं।

थोड़ी-सी मस्ती

लन्च से पहले की चाय व समोसा/कचौरी/ब्रेड पकोड़ा/मट्ठी/बिस्कुट तथा लन्च के बाद की चाय व लड्डू/पेठा/पेड़ा के पैसे देने **एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट** के मजदूरों ने बन्द कर रखे हैं। मई में वरकरों ने कैन्टीन की चाय-समोसे-लड्डू फ्री में लेने शुरू किये थे और जून के अन्त के समय भी एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट के मजदूर फ्री की डगर पर मस्ती में मटक रहे थे।

मई में एक दिन एक डिपार्टमेन्ट के मजदूरों ने क्वालिटी खराब होने पर कैन्टीन से आये समोसों और चाय के पैसे देने से इनकार कर दिया। लन्च के बाद की चाय और लड्डूओं के पैसे भी इन वरकरों ने नहीं दिये। उस डिपार्टमेन्ट की दूसरी शिफ्ट ने भी ऐसा ही किया। दूसरे दिन भी वरकरों ने यह सिलसिला जारी रखा तो अन्य डिपार्टमेन्टों के मजदूरों ने भी चाय-मट्ठी-लड्डू के पैसे देने बन्द कर दिये। तीसरे दिन तो ट्रैक्टर डिविजन और शॉकर डिविजन के किसी भी मजदूर ने पैसे नहीं दिये। फ्री की बयार के पूरे फस्ट प्लान्ट में फैल जाने पर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट हरकत में आई।

परसनल मैनेजर और लीडर दौड़े-दौड़े एक डिपार्टमेन्ट में पहुँचे और मजदूरों से कहने लगे कि यह तो बहुत गलत हो रहा है। इस पर वरकरों ने कहा कि एक तो कैन्टीन से मैटेरियल खराब आता है और फिर मैनेजमेन्ट साल-भर से मजदूरों का च्यवनप्राश तथा फेरीडॉल नहीं दे कर ठीक कर रही है क्या। वरकरों द्वारा च्यवनप्राश की बात उठाते ही परसनल मैनेजर और लीडर वहाँ से खिसक लिये।

फस्ट प्लान्ट वरकरों पर मिनी एग्रीमेन्ट थोपने में फेल होने और यामाहा प्लान्ट में मजदूरों से पँगा लेने पर मई में बीस दिन असेम्बली लाइन जाम रहने के कारण गहन चिन्तन में डूबी एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट का फस्ट प्लान्ट में फ्री की बयार के सम्मुख बुत बनना उसकी मजबूरी है।

आटोमेशन का भुर्ता

एक फैक्ट्री में एक आपरेशन के लिये मैनेजमेन्ट ने आटोमेशन किया। इससे मजदूरों की रेल बन गई। पहले एक लॉट के बाद वरकर कुछ सुस्ता लेते थे पर आटोमेशन ने फुरसत के क्षण खा लिये। उस डिपार्टमेन्ट में गैस भी बहुत लगती थी।

मजदूरों ने राहत के लिये क्रेनों से खेलना शुरू किया। एक ही समय पर दो क्रेनों के बटन दबा देते। विपरीत दिशाओं से आ कर क्रेनें आपस में टकरा जाती और खराब हो जाती। मशीन ब्रेक डाउन से मजदूरों को साँस लेने की फुरसत मिल जाती और गैस से भी राहत मिलती।

मेन्टेनैन्स का एक बन्दा मैनेजमेन्ट से शिकायत करने लगा कि वरकर जानबूझकर क्रेन खराब करते हैं। इस पर एक दिन क्रेन खराब नहीं थी तब क्रेन खराब बता कर उसे बुलाया गया। मेन्टेनैन्स वाला क्रेन पर चढ़ गया तब नीचे से किसी देवता ने बटन दबा दिया। क्रेन चलने पर मेन्टेनैन्स वाला घबरा कर बचाओ-बचाओ चिल्लाया। क्रेन रोक दी गई। नीचे उतर कर मेन्टेनैन्स वाले ने आगे से कभी मैनेजमेन्ट को शिकायत नहीं करने की कसम खाई।

छापों का बाजा

दारू चैक करने रात को साढे आठ बजे चीफ सैक्युरिटी, परसनल मैनेजर, प्रोडक्शन मैनेजर, कई सैक्युरिटी अफसर और वॉचमैन **एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट** में दनदनाते हुये घुसे। चीफ सैक्युरिटी ने अपने पुराने कर्नल वाले रौब से पूछा : "कोई दारू पी रहा है क्या?" मजदूरों की तरफ से आवाज आई : "तुम लोग हमारा च्यवनप्राश खाये बैठे हो", और हूटिंग शुरू हो गई। बढते शोर पर थोक में जल रही ट्युब लाइटों और बल्बों के बीच टार्चे जलाये पूरी फोर्स भाग खड़ी हुई।

पाँच-छह साल पहले रात को सोते हुये मजदूरों के फोटो लेने के लिये फोटोग्राफर ले कर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने फस्ट प्लान्ट में छापा मारा था। बिजली गुल। किसी प्रेत द्वारा फेंके लोहे के पीस से एक वॉचमैन का कन्धा फ्रेकचर हो गया था। छह साल तक छापे बन्द।

नमस्ते के नुकसान

बात-बात में एक मजदूर ने कहा ; "अगर हम फोरमैन से बोलते नहीं हैं तो उसकी भी हमसे बोलने की हिम्मत नहीं होती। अपना निर्धारित काम तो हमें करना ही पड़ता है। फोरमैन के साथ जो उठ-बैठ रखते हैं, उन्हें ही जरूरत पड़ने पर फोरमैन एक्स्ट्रा काम करने को कहता है।"

फोरमैन

एक फोरमैन हर समय मजदूरों के सिर पर खड़ा रहता था। नये वरकरों को तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं देता था। मजदूर उससे परेशान थे।

सर्दियों में रात की शिफ्ट में मैटेरियल नहीं होने के कारण डिपार्टमेन्ट बन्द थी। अपने शीशे के चेम्बर में अंगीठी जला कर फोरमैन सो गया। डिपार्टमेन्ट में मजदूर भी सो गये। रात को ढाई बजे के करीब किसी भूत ने फोरमैन के चेम्बर का दरवाजा बन्द कर दिया। चार बजे वाचमैन दौरे पर आया तब उसने शीशे को खटखटाया पर फोरमैन नहीं उठा। अंगीठी जलती देख वाचमैन ने दरवाजा खोलने की कोशिश की तो ताला बन्द मिला। चेम्बर का शीशा तोड़ कर तब वाचमैन ने बेहोश पड़े फोरमैन को निकाला। एम्बुलैन्स अस्पताल दौड़ी। फोरमैन ठीक हो गया पर उसके बाद उसने मजदूरों को तंग करना बन्द कर दिया।

"विशेष परिस्थितियाँ" --- यह भाषा सरकारों, मैनेजमेन्टों, लीडरों की है। खास परिस्थितियाँ कुछ नहीं होती। बद से बदतर होती हालात मजदूरों के लिये आम बात है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुदित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।